भारत के तत्कालीन उपराष्ट्रपति भैरोसिंह शेखावत दादी जी के संग एक समारोह में दीप प्रज्जवलित करते हुए।

भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ.ए.पी.जे.अब्दुल कलाम दीप प्रज्जवलन कर उद्घाटन करते हुए। साथ में दादी प्रकाशमणि।

तत्कालीन उपप्रधानमंत्री लालकृष्ण आडवाणी दादी जी से आध्यात्मिक चर्चा करते हुए।

आन्ध्र प्रदेश के तत्कालीन मुख्यमंत्री चन्द्रबाबू नायडू को ईश्वरीय सौगात देते हुए दादी प्रकाशमणि।

अखिल भारतीय सर्वधर्म सम्मेलन में जगद्गुरू व अन्य संतजन दादी प्रकाशमणि के साथ।

मारीशस के तत्कालीन प्रधानमंत्री अनरूद जगनाथ के साथ दादीजी।

आध्यात्मिक जीवन ...

-पेज 1 का शेष

महान बनाया, लाखों लोगों को प्रभु-मिलन कराया और परमात्मा के महान कार्य का सफलता व कुशलता पूर्वक संचालन किया। आज भी प्रतिदिन अनेकों के मानस पटल पर उनकी छवि उभर आती है और 25 अगस्त को तो सारा ब्राह्मण परिवार उनके प्रेम व अपनेपन को स्मरण करके भावविभोर हो जाता है। उनकी याद में निर्मित प्रकाश-स्तम्भ प्रतिदिन असंख्य ब्राह्मणों को योग की दिव्य अनुभूतियां कराता है।

कुशल प्रशासक के साथ वे समस्त ब्राह्मण परिवार की स्नेहमयी दादी भी थीं। आज उनकी अनुपस्थिति विशाल ब्राह्मण परिवार में एक रिक्तता का आभास कराती है। वे निर्मल, निष्काम व आत्मिक प्रेम की प्रतिमूर्ति थीं। प्यार बांटना उनका प्रमुख कर्त्तव्य था। जब लोगों से गलती भी हो जाती थी तो वे प्यार का प्रसाद देना नहीं भूलती थीं। उनकी शिक्षाओं में भी कल्याण का भाव व प्यार समाया होता था। वे चाहती थीं कि भगवान का ये परिवार पवित्रता व प्रेम से भरपूर हो। लगभग 20 वर्ष पूर्व पाण्डव भवन में महामण्डलेश्वरों का एक धर्म सम्मेलन रखा गया था जिसमें अनेक संत-महानात्माओं ने हिस्सा लिया। दादीजी ने सभी को अपने पावन प्रेम में बांध लिया था। विरोधी सहयोगी बन गये और ग्लानि करने वाले प्रशंसक बन गये। एक प्रसिद्ध महामण्डलेश्वर ने तो मंच से भरी सभा में कह दिया कि मैं तो पूरा जीवन बाबा को व दादी को गाली ही देता आया हूँ। आज मुझे पता लगा कि वे कितनी महान हैं। उन्होंने अपना अनुभव सुनाते हुए दिल को स्पर्श करने वाली बात कही कि आज सबेरे जब दादीजी हमें सारे आश्रम घुमा रही थी तो मैंने दादीजी का हाथ स्पर्श किया और मैं नतमस्तक हो गया दादीजी के पवित्र वायब्रेशन्स देखकर। ऐसी पवित्र आत्मा इस धरा पर ढूंढना भी असंभव है। आज से मैं दादी का भाई हूँ और दादी का जब भी बुलावा होगा, मैं दौड़ा चला आऊंगा। जितनी ग्लानि आज तक मैंने की है अब उससे सौ गुना प्रशंसा के पुष्प चढ़ाऊंगा। उन्हें इस तरह समर्पित होता देख, सभी धर्म धुरंधर नतमस्तक हो गये। ऐसी थी ब्राह्मण परिवार की आत्म दादी प्रकाशमणि।

बहुत वर्ष पहले की बात है। हमारा ये रूद्र यज्ञ बहुत छोटा था। प्रथम बार 45 पत्रकार हमारे एक छोटे से सम्मेलन में आये। हिस्ट्री हॉल में दादीजी ने शब्दों से उनका इतना भावभीना सत्कार किया कि वे मंत्रमुग्ध हो गये उनकी यात्रा की थकान उतर गई, उन्हें लगा कि दादी तो हमारी है और अगले ही दिन भारत के अनेक अखबारों में छपा - प्रेम की देवी, दादी प्रकाशमणि।

हम भोजनालय में सेवारत थे। हम छोटे थे, हमें भोजन बनाना नहीं आता था। वे प्रतिदिन पांच बार किचन आती थीं। हमें स्नेह देती थीं, पूछती थीं कि आज क्या बनाया है, भोजन देखती थीं व चखती थीं। कुछ सिखाना होता था तो अति स्नेह से व सिखाने की भावना से सिखाती थीं। हमसे गलती होती थी तो वे हमें डांटती नहीं थीं। हंसते-हंसते कहती थीं - आज तो ये डालना भूल ही गये। हम कभी-कभी नुकसान भी कर देते थे, परन्तु हमें समझाते हुए इतना हल्का कर देती थीं जो हम उस नुकसान की भरपाई में लग जाते थे।

हमने अत्यधिक सुख उस समय प्रतिदिन पाया, जब वे सबेरे भगवान के महावाक्य (मुरली) सुनाती थीं। उन्हें ये वरदान था। वे मुरली में रस भर देती थीं, सभा में परम आनंद की लहर छा जाती थी। हमारा वो एक घण्टा जैसे कि पावरफुल योग में बीतता था।

वे चलता-फिरता फरिश्ता थीं। प्रारंभ में वे यज्ञ के सभी विभागों में जाती थीं, उन्हें अपनापन देती थीं, सबसे पूछती थीं - कुछ चाहिए। उनके ये शब्द सुनकर सबकी चाहना ही लोप हो जाती थी। सभी आश्चर्यवत होकर उन्हें निहारने लगते थे जब वे बीस हजार की सभा में पूछती थीं - बोलो क्या खाओगे, आइसक्रीम खाओगे? सभी उनकी उदारता व अपनेपन के समक्ष सिर झुका देते थे। सचमुच वे ही योग्य पात्र थीं इस महान आत्माओं के विशाल परिवार की मुखिया बनने के।

लोग तो भगवान को प्यार करते हैं। अनेक ब्रह्मा-वत्स भगवान का प्यार पाने के इंतजार में रहते हैं, परन्तु हमने देखा भगवान स्वयं उन्हें न केवल प्यार करते हैं बल्कि उन्हें बहुत सम्मान देते हैं। नि:संदेह दादीजी भी श्रेष्ठ योगी थीं, परमात्म-प्यार में मगन रहने वाली थीं परन्तु बाबा का उनसे मिलन देखकर 'अबू मिन आदम' की कहानी मानस पटल पर उभर आती थीं। सुना होगा आपने - अबू के स्वप्न में एक फरिश्ता आया जिसके हाथ में एक लिस्ट थी। अबू ने पूछा, ये क्या है? फरिश्ते ने उत्तर दिया ये उन लोगों की लिस्ट है जो भगवान को बहुत प्यार करते हैं। अबू ने पूछा, इसमें मेरा नाम कहां है? 'सबसे अंत में' - यह कहकर फरिश्ता लोप हो गया। दूसरी रात एक लिस्ट के साथ फरिश्ता पुन: प्रकट हुआ और अबू ने पून: पूछा, आज किनकी लिस्ट है? फरिश्ते ने फरमाया कि 'ये लिस्ट उनकी है जिन्हें भगवान बहुत प्यार करता है, इसमें सबसे ऊपर आपका ही नाम है,' यह कहकर फरिश्ता अदृश्य हो गया। यह सुनकर अबू प्रभु-प्रेम में मग्न हो गया।

ये वृतांत पूर्णतया सत्य है दादी प्रकाशमणि के लिए। क्यों उन्हें भगवान इतना प्यार करता था जो अव्यक्त होते समय बाबा ने उनका हाथ पकड़कर उन्हें अपनी समस्त शक्तियां दे दी थीं। क्योंकि वे निर्मल थीं, वे अनासक्त थीं, वे त्यागी व परोपकारी थीं। उनका चित्त सभी के लिए शुभ-भावनाओं से भरा था, वे निर्विकारी थीं। उन्होंने भगवान द्वारा रचित रूद्र यज्ञ को सफल बनाया था, उसमें आने वाले विघ्नों को समाप्त किया था। सचमुच वे यज्ञ रक्षक थीं। वे चाहती थीं कि प्रत्येक यज्ञ-वत्स संतुष्ट रहे, योगी बनकर रहे, व्यर्थ से मुक्त रहे। सब एक-दूसरे को सुख देते रहें, संतुष्ट करते रहें। सब यज्ञ सेवा से अपना भाग्य चमकाते रहें। हम यज्ञ-वत्स उनकी इन शुभ-कामनाओं को पूर्ण करके उनकी श्रेष्ठ पालना का रिटर्न देंगे।

हे विश्व की आधारमूर्त, आपको कोटि-कोटि नमन्! हे जहान के नूर, आपको बारम्बार नमन्। हे असंख्य आत्माओं के दिल के दीपक आपको शत् शत् नमन्। सारा विश्व आपका ऋणी है। हम इस पुण्य स्मृति पर आपको श्रद्धा सुमन अर्पित करते हैं। आप समान सच्चाई व निरहंकारिता को धारण करते हुए आपके स्वप्नों को साकार करें।

दादीजी का अभिवादन करते हुए जगद्गुरू श्री शिवरात्रि देशीकेन्द्र।

महाराष्ट्र के तत्कालीन मुख्यमंत्री शरद पवार के साथ दादीजी।